International Journal of Social Research and Development
www.socialsciencejournal.net
Online ISSN: 2664-8709, Print ISSN: 2664-8695
Received: 14-07-2025, Accepted: 14-08-2025, Published: 29-08-2025
Volume 7, Issue 2, 2025, Page No. 77-79

# बाल गंगाधर तिलक के राष्ट्रवाद पर विचार

**डॉ. महफूज आलम[1], प्रशांत चंद निर्मल[2]**
[1] Assistant Professor, University Department of Political Science TMBU Bhagalpur Bihar, India
[2] Prashant Chand Nirmal, Research Scholar, University Department of Political Science TMBU Bhagalpur Bihar, India

**सारांश**
यह लेख लोकमान्य तिलक के राजनीतिक विचारों के विभिन्न पहलुओं को रेखांकित करने का प्रयास करता है। यह भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान एक जनप्रिय नेता के रूप में तिलक के विशिष्ट महत्त्व पर प्रकाश डालता है। यह राष्ट्रवाद, स्वराज, सामाजिक सुधार आदि पहलुओं पर तिलक के विचारों का विश्लेषण करता है। यह लेख तिलक के सामाजिक–राजनीतिक विचारों की बौद्धिक जड़ों को प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा की विरासत में खोजता है। यह शिक्षा एवं राष्ट्रवाद पर तिलक के विचारों के बीच संबंध को भी स्पष्ट करता है।

**मुल शब्दः** राष्ट्रवाद, स्वराज, हिंदू धर्म, वेद, शिक्षा।

**भूमिका (Introduction):** भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के नेताओं में बाल गंगाधर तिलक का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। भारत में राष्ट्रवाद की संकल्पना को सिद्धान्त एवं व्यावहारिक राजनीति में विकसित करने में तिलक का विशिष्ट योगदान रहा है। सन् 1920 से पहले भारत में तिलक का प्रभाव व्यापक एवं उल्लेखनीय था। उन्होंने भारत की जनता को अंग्रेजों के खिलाफ सफलतापूर्वक एकजुट किया। तिलक का प्रारंभिक जीवन चुनौतियों से भरा रहा है। अपने प्रारंभिक वर्षों में उन्हें अनेक संघर्षों एवं कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

## राष्ट्रवाद पर विचार

तिलक द्वारा प्रतिपादित राष्ट्रवाद की अवधारणा धर्म से जुड़ी हुई थी। यह राष्ट्रवाद प्रचलित पश्चिमी परिभाषाओं से भिन्न था, जिनमें धार्मिक पहलू नहीं थे। तिलक एक धर्मनिष्ठ हिंदू थे और वेदों में उनकी गहरी आस्था थी। उन्हें पवित्र ऋग्वेद में वर्णित एक शक्तिशाली और सर्वव्यापी परम सत्ता में विश्वास था। उन्हें उपनिषदों और भगवदगीता की सत्यता पर भी अटूट विश्वास था। तिलक सगुण ईश्वर (इष्टदेवता) की अवधारणा में विश्वास करते थे।

तिलक का राष्ट्रवाद स्वामी विवेकानंद के राष्ट्रवाद की तर्ज पर पुनरुत्थानवादी था। तिलक भारत को एक विशाल एवं शक्तिशाली राष्ट्र की तरह संगठित करने की दिशा में सदैव प्रयत्नशील रहे।[1] लोकमान्य तिलक ने राष्ट्रवादी विमर्श के आर्थिक पहलुओं पर भी ध्यान दिया। उन्होंने दादाभाई नौरोजी के 'निष्कासन सिद्धान्त' (Theory of Drain of wealth) का पूर्ण समर्थन किया। उन्होंने स्वदेशी एवं बहिष्कार आंदोलन का पुरजोर समर्थन किया।

तिलक का राष्ट्रवाद वेदान्तिक ज्ञान से व्युत्पन्न था। उनका राष्ट्रवाद धर्म का अभिन्न अंग था। राष्ट्रवाद को धर्म का एक अनिवार्य घटक बताकर उन्होंने भारत की आम जनता को राष्ट्रीय आंदोलन में शामिल करने का सफल प्रयास किया। आम जनता धर्म और धार्मिक प्रतीकों से ज्यादा परिचित थी। अतः तिलक ने धर्म एवं धार्मिक प्रतीकों का प्रयोग राष्ट्र हित में करते हुए आम जनता को राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ा। तिलक का मत था कि राष्ट्रवाद जन भावनाओं से जुड़ा है जो भारत के इतिहास की वीरगाथाओं में गहराई से निहित है। भारत की ऐतिहासिक विरासत में शिवाजी एक महान धर्मनिष्ठ शासक के प्रतीक हैं। तिलक ने शिवाजी जयंती के अवसर पर उत्सव का आयोजन कर जनमानस में भारतीय राष्ट्रवाद की भावना को उत्प्रेरित करने का काम किया।

तिलक की पारिवारिक पृष्ठभूमि एवं संस्कृत भाषा में प्रवीणता ने उनमें प्राचीन भारतीय संस्कृति और हिन्दू द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों के प्रति गहरी आस्था उत्पन्न की। उन्होंने सक्रिय रूप से स्थापित उन प्राचीन सभ्यतागत मानदंडों को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया जिन्होंने कभी भारत को महानता की ओर अग्रसर किया था। इस रुख का तार्किक परिणाम यह था कि उन्होंने पश्चिमी मूल्यों, पश्चिमी शिक्षा का खंडन और पश्चिमी संस्कृति एवं आदर्शों के अनुकरण को बढ़ावा देने वाले कांग्रेस के नरमपंथी नेताओं की निंदा थी। यही कारण है कि तिलक भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के भीतर नरमपंथियों के आलोचक थे।

तिलक के कानूनी प्रशिक्षण ने उन्हें प्राचीन भारतीय विधि ग्रंथों एवं पांडुलिपियों का गहन अध्ययन करने का अवसर प्रदान किया। संस्कृत भाषा में उनकी निपुणता, धार्मिक अभिरुचि एवं दार्शनिक ग्रंथों के गहन अध्ययन ने उन्हें भारत की ऐतिहासिक उपलब्धियों के एक समर्पित प्रशंसक के रूप में स्थापित किया।2

तिलक ने विदेशी शासकों द्वारा भारत के आर्थिक शोषण की भी पड़ताल की। सन् 1896 के भीषण अकाल के दौरान उन्होंने जनता को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। उनके सार्थक प्रयासों के कारण स्वदेशी आंदोलन एक राष्ट्रव्यापी आंदोलन बन गया। उन्होंने विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का पुरजोर समर्थन किया। लोगों में राजनीतिक जागरूकता बढ़ाने के लिए तिलक ने दो पत्रिकाएँ 'केसरी' एवं 'मराठा' शुरू कीं। इन प्रकाशनों के माध्यम से उन्होंने देशवासियों के दिल एवं दिमाग में राष्ट्रवाद की भावना जगाने का साहसिक प्रयास किया।[3]

तिलक ने पहली बार सन् 1889 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में भाग लिया। उन्होंने ब्रिटिश कुशासन का विरोध करने में नरमपंथियों की आलोचना करके इस अधिवेशन में हलचल मचा दी। यह दृष्टिकोण बिल्कुल नवीन था, जिससे कांग्रेस के नरमपंथी नेता अपरिचित थे। तिलक भारत में राष्ट्रवाद को बढ़ावा देने के संदर्भ में धर्म का राजनीतिक उद्देश्यों के लिए प्रयोग करने में नरमपंथी नेताओं की तरह संकोच नहीं करते थे।[4]

तिलक का राष्ट्रवाद उग्र एवं ओजस्वी प्रकृति का था। उन्होंने गणेश उत्सव एवं शिवाजी जयंती के आयोजनों के माध्यम से राजनीतिक लामबंदी के तरीके प्रस्तुत किये। ये आयोजन भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान महाराष्ट्र एवं उसके आस–पास के क्षेत्र की राजनीतिक गतिविधि के अभिन्न अंग बन गये। प्राचीन हिन्दू परम्पराओं के प्रति लगाव के कारण तिलक ने इन आयोजनों में सक्रियता दिखाकर देश में राष्ट्रवाद की भावना विकसित की।

तिलक को अपने साहसिक राजनीतिक कार्य एवं लेखन के कारण गंभीर परिणामों का सामना करना पड़ा। उन्हें कई बार कारावास का सामना करना पड़ा। अपनी राजनीतिक सक्रियता के अंतिम चरण में तिलक ने स्वराज प्राप्ति के उद्देश्य से 'होम रूल लीग' के प्रचार पर ध्यान केंद्रित किया। सन् 1918–19 में उन्होंने इंग्लैंड की यात्रा की और वहाँ सत्तारूढ़ लेबर पार्टी के नेताओं को भारत की राजनीतिक स्थिति से अवगत कराया। उन्होंने भारत के नेताओं और इंग्लैंड के लेबर पार्टी के नेताओं के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित कराने के प्रयास किए।

तिलक का मानना था कि हिंदू धर्म की मूल शिक्षाएँ कर्म के महत्त्व पर जोर देती हैं। इस संदर्भ में वे इसे एक अत्यंत व्यावहारिक धर्म मानते थे जो किसी विशिष्ट ऐतिहासिक काल की चुनौतियों का समाधान करने के लिए उचित कार्यवाही की वकालत करता था। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के आरंभ में नरमपंथी कांग्रेसी नेताओं द्वारा समर्थित उदार – धर्मनिरपेक्ष विचारधाराओं के कारण भारतीय जनमानस कम आंदोलित हुआ। इसके विपरीत तिलक का तर्क था कि धर्म और राजनीति को अलग नहीं किया जा सकता है।[5]

तिलक ने धर्म एवं राजनीति के बीच सह–अस्तित्व पर जोर दिया। धर्म और राजनीति के बीच समावेशी सम्बन्ध को तिलक ने भारतीय राष्ट्रवाद के दृष्टिकोण से राष्ट्र हित में माना। उनका मानना था भारत राष्ट्र की सामूहिक भावना निरंतर मुक्ति और स्वतंत्रता के लिए प्रयासरत है। इस सामूहिक भावना को तिलक ने धर्म एवं राजनीति के बीच सह–अस्तित्व स्थापित कर एक सकारात्मक दिशा दी।

## अंग्रेजों के खिलाफ हिन्दू–मुस्लिम एकता की खोज

अंग्रेजी हुकूमत के दौरान शिवाजी जयंती समारोह के मौके पर हिंदू–मुस्लिम सांप्रदायिक दंगे भड़कते थे। इससे आलोचकों ने तिलक को एक सांप्रदायिक नेता के रूप में चित्रित करने का प्रयास किया। परंतु तिलक ने स्पष्ट किया कि शिवाजी जयंती का चयन भारतीय राष्ट्रवाद को सुदृढ़ करने के लिए किया गया था। तिलक के आध्यात्मिक राष्ट्रवाद की अवधारणा मुस्लिम विरोधी नहीं थी। तिलक का तर्क था कि ब्रिटिश शासन के दौरान मुसलमानों के साथ संघर्ष का कोई औचित्य नहीं था। उन्होंने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध हिंदुओं एवं मुसलमानों के एक संयुक्त मोर्चे की कल्पना की थी। उन्होंने सिर्फ राजनीतिक उद्देश्य के लिए हिंदू धर्म से संबंधित प्रतीकों एवं अभिव्यक्तियों का उपयोग किया। तिलक किसी भी तरह से सांप्रदायिक एवं मुस्लिम–विरोधी नेता नहीं थे। वे केवल ब्रिटिश शासन के मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति का विरोध करते थे। वे हिंदुओं और मुसलमानों दोनों को समान सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक अधिकार प्रदान करने के हिमायती थे। उन्होंने बहुसंख्यक हिंदुओं की भावना के प्रति सम्मान व्यक्त करते हुए गो–हत्या के प्रति असहमति व्यक्त की। ऐसा करके वे हिंदू–मुस्लिम एकता को मजबूत करना चाहते थे। जिससे अंग्रेजों के खिलाफ राष्ट्रीय आदोलन भी मजबूत होता। तिलक भारतीय समाज में विद्यमान जाति एवं धर्म के सामाजिक विभेदों से ऊपर स्वदेश–प्रेम की भावना को सुदृढ़ कर राष्ट्रवाद को मजबूत करना चाहते थे।[6]

## शिक्षा एवं राष्ट्रवाद के बीच संबंध

तिलक ने ब्रिटिश काल में स्कूलों में निर्धारित पाठ्यक्रम पर राष्ट्रवादी दृष्टिकोण की अवहेलना के कारण असंतोष व्यक्त किया। उन्होंने भारत के धार्मिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का सम्मान करने वाले राष्ट्रीय शिक्षा पाठ्यक्रम की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने धर्मनिरपेक्ष शिक्षा की आलोचना की और कहा कि यह चरित्र निर्माण के लिए अपर्याप्त है। तिलक शिक्षा पाठ्यक्रम में शिवाजी जैसे राष्ट्रीय नायकों के जीवन वृत्त एवं उपलब्धियों को शामिल करना चाहते थे।

तिलक ने खुद को राष्ट्रवाद की भावना को जगाने के लिए समर्पित कर दिया। वे शिक्षा के माध्यम से भारत राष्ट्र की अपनी ऐतिहासिक उपलब्धियों को पहचानने में सक्षम बनाना चाहते थे। शिक्षा के क्षेत्र में रचनात्मक पहल कर तिलक भारतीय युवाओं को राष्ट्रवादी आदर्शों से ओतप्रोत करना चाहते थे। तिलक ने फर्ग्यूसन कॉलेज में गणित एवं संस्कृत विषय खुद भी पढ़ाया था। ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली के प्रति तिलक ने असहमति व्यक्त की क्योंकि वह धार्मिक शिक्षा की उपेक्षा करती थी। तिलक की राष्ट्रीय शिक्षा योजना में चार प्रमुख तत्त्व शामिल थे– धर्मनिरपेक्ष शिक्षा, धार्मिक शिक्षा, औद्योगिक शिक्षा एवं राजनीतिक शिक्षा। तिलक ने इसमें धार्मिक शिक्षा को सर्वोच्च महत्त्व दिया क्योंकि धर्म उच्च नैतिक सिद्धान्तों का आधार है। उन्होंने राजनीतिक शिक्षा को भी महत्त्वपूर्ण बताया। इससे छात्रों को देश के नागरिक के रूप में अपने अधिकारों एवं दायित्वों को समझने में मदद मिलती है। तिलक ब्रिटिश– आरोपित अंग्रेजी शिक्षा को देश में राष्ट्रवाद के विकास के दृष्टिकोण से हानिकारक मानते थे। वे इसे भारत राष्ट्र के भविष्य के लिए भी लाभप्रद नहीं मानते थे।[7]

तिलक का दृढ़ विश्वास था कि ब्रिटिश शिक्षा–प्रणाली न केवल भारतीय युवाओं को हमारी विरासत के प्रति उदासीन बना देगी, बल्कि उन्हें भविष्य के लिए भी अप्रासंगिक बना देगी।[8]

## निष्कर्ष

तिलक निस्संदेह भारतीय राष्ट्रवाद के अग्रदूत रहे हैं। वे देश के महत्त्वपूर्ण स्वतंत्रता सेनानियों में से एक थे। उन्होंने भारत के राष्ट्रीय आंदोलन को एक स्पष्ट दिशा प्रदान की। वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के शुरुआती दौर के सबसे प्रमुख नेता थे। वे कांग्रेस के नरमपंथी गुट की आलोचना करते हुए अपने ओजस्वी राष्ट्रवाद की साहसिक अवधारणा प्रस्तुत की। तिलक का राष्ट्रवाद भारतीय धार्मिक एवं सांस्कृतिक परम्पराओं पर आधारित था। उनका मानना था कि वैदिक धर्म की अवधारणा हिंदू आस्था से जुड़ी होने के बावजूद समस्त मानवता के लिए लाभकारी एवं प्रासंगिक है। यही कारण था कि उन्होंने राष्ट्रवाद के विचार को मानवीय सद्भाव के वेदान्तिक सिद्धांत के साथ एकीकृत करने का प्रयास किया है। उन्होंने वेदों एवं भगवद्गीता की शिक्षाओं को लोकप्रिय बनाने का काम किया। उन्होंने राष्ट्रवाद के माध्यम से देश के लोगों में आध्यात्मिक एवं नैतिक ऊर्जा का संचार किया।[9]

तिलक का राष्ट्रवाद वास्तव में देश में लोकतांत्रिक मूल्यों का समर्थन कर लोक– कल्याणकारी राज्य की स्थापना करना चाहता है। इसीलिए तिलक 'स्वराज्य' के हिमायती रहे हैं। भारत को ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता दिलाने के लिए तिलक सदैव प्रयत्नशील रहे। 'भारत माता' के वीर सपूत तिलक का राष्ट्रीय आंदोलन में योगदान अविस्मरणीय है।

## संदर्भ सूची

1. देसाई, ए. आर. . भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि. नई दिल्ली : मैकमिलन इंडिया, 1966.
2. कुमार, पवन. भारतीय राजनीति की दिशा एवं दशा (स्वतंत्रता से पूर्व). नई दिल्ली : वंदना पब्लिकेशन्स, 2011.
3. अग्रवाल, मीना. लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक. नई दिल्ली : डायमंड बुक्स पब्लिकेशन, 2017.

4. शर्मा, डॉ. वीरेन्द्र. आधुनिक राजनीतिक विचारधाराएँ. नई दिल्ली : यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, 2008.
5. गुप्ता, आर. सी.. महान राजनीतिक विचारक (पूर्व और पश्चिम) लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा : शैक्षिक प्रकाशक, 1994.
6. तिवारी, विनोद. बाल गंगाधर तिलक. नई दिल्ली : मनोज पब्लिकेशन, 2005.
7. सिंह, मनोज कुमार एवं शैलेश कुमार चौधरी. बाल गंगाधर तिलक. नई दिल्ली : डिस्कवरी पब्लिशिंग, 2012.
8. नेमा, डॉ. जी. पी. भारतीय राजनीतिक विचारक. नई दिल्लीः यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, 2007.
9. कुमार, एम० एवं दीप्ति शर्मा. बाल गंगाधर तिलक. नई दिल्ली : अर्जुन पब्लिकेशन हाउस, 2011.